# एच.सी.एस. मुख्य परीक्षा-2022
# हिन्दी
# HCS Mains Exam-2022
# Hindi

2022

# हिन्दी (हिन्दी निबंध सहित)

समयः 3 घंटे | अधिकतम अंकः 100

प्रश्न पत्र के लिए विशिष्ट निर्देश

1. सभी प्रश्नों के उत्तर लिखना अनिवार्य है।
2. प्रत्येक प्रश्न/भाग के लिए नियत अंक उसके सामने दिए गए हैं।
3. प्रश्न का उत्तर देने से पहले प्रश्न संख्या दर्शाये।
4. प्रश्न के भागों का उत्तर एक साथ देवें।
5. प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।

**1. हिन्दी में अनुवाद कीजिए :** (10)

Just as physical training was to be imparted through physical exercise, and intellectual through intellectual exercise, even so the training of the spirit was possible only through the exercise of the spirit. And the exercise of the spirit entirely depended on the life and character of the teacher. The teacher had always to be mindful of his p's and q's whether he was in the midst of his boys or not. It is possible for a teacher situated miles away to affect the spirit of the pupils by his way of living. It would be idle for me, if I were a liar, to teach boys to tell the truth. A cowardly teacher would never succeed in making his boys valiant, and a stranger to self-restraint could never teach his pupils the value of self-restraint. I saw, therefore, that I must be an eternal object-lesson to the boys and girls living with me.

**2. केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा किसी राज्य के शिक्षा-निदेशक को 'राष्ट्रीय भावनात्मक एकीकरण में शिक्षा संस्थाओं का योगदान' निमित्त एक समिति गठित करने के लिए पत्र लिखिए ।** (10)

**अथवा**

**केन्द्रीय गृह मंत्रालय द्वारा हिन्दी प्रशिक्षण योजना से संबद्ध हिन्दी अध्यापकों के, उनके वर्तमान पद पर उनके नाम के सामने निर्देशित केन्द्रों पर तत्काल स्थानांतरण का एक 'कार्यालय आदेश' का एक पत्र तैयार कीजिए ।**

**3. निम्नलिखित अवतरण का सार एक-तिहाई शब्दों में लिखिए :** **(10)**

हमने जिस भाषा के साहित्य-भंडार को भरने का व्रत लिया है, उसका महत्त्व और भी अधिक है । वह भारतवर्ष के केन्द्रीय प्रदेशों की भाषा है, कई करोड़ आदमियों की ज्ञानपिपासा उसे शांत करनी है । इसलिए उसे सम्पूर्ण ज्ञान-विकास का वाहन बनाना है । हम लोग जब हिन्दी की 'सेवा' करने की बात सोचते हैं, तो प्रायः यह भूल जाते हैं कि यह लाक्षणिक प्रयोग है । हिन्दी की सेवा का अर्थ है उस मानव समाज की सेवा, जिसके विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम हिन्दी है । मनुष्य ही बड़ी चीज है, भाषा उसी की सेवा के लिए है । साहित्य-सृष्टि का भी यही अर्थ है । जो साहित्य अपने आप के लिए लिखा जाता है उसकी क्या कीमत है, मैं नहीं कह सकता, परन्तु जो साहित्य मनुष्य समाज को रोग-शोक, दारिद्रय-अज्ञान तथा परमुखापेक्षिता से बचाकर उसमें आत्मबल का संचार करता है, वह निश्चय ही अक्षयनिधि है । उसी महत्त्वपूर्ण साहित्य को हम अपनी भाषा में ले आना चाहते हैं । नगरों और गाँवों में फैला हुआ, सैकड़ों जातियों और सम्प्रदायों में विभक्त, अशिक्षा, दारिद्रय और रोग से पीड़ित मानव समाज आपके सामने उपस्थित है । भाषा और साहित्य की समस्या वस्तुतः उन्हीं की समस्या है । शताब्दियों की सामाजिक, मानसिक और आध्यात्मिक गुलामी के भार से दबे हुए ये मनुष्य ही भाषा के प्रश्न हैं और संस्कृति तथा साहित्य की कसौटी है । हमारी भाषा, हमारा साहित्य, हमारी राजनीति-सब कुछ का उद्देश्य यही हो सकता है कि इनको दुर्गतियों से बचाकर किस प्रकार मनुष्यता के आसन पर बैठाया जाय ।

**4 (क) सरल हिन्दी में व्याख्या कीजिए :** **(05)**

पिछले दस वर्षों के दौरान सूचना टेक्नॉलॉजी के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन आये हैं । जहाँ दूरसंचार के नये-से-नये माध्यम हम तक पहुँच रहे हैं, वहीं अपनी बात को दुनिया के सुदूरतम कोनों तक पहुँचाना अब चुटकियों का खेल बन गया है । लेकिन यह हमारा दुर्भाग्य है कि इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण संसाधन का अधिकाधिक प्रयोग आज उपभोक्ता संस्कृति के प्रणेता कर रहे हैं, जबकि जन-सामान्य के बीच कार्य कर रहे बुद्धिजीवियों एवं कार्यकर्ताओं को अब भी इसकी समूची सम्भावनाओं की जानकारी तक नहीं है । अंचलों में कम्प्यूटर केन्द्रित विधाओं का चलन अब भी बहुत धीमी रफ्तार से बढ़ रहा है । टेक्नॉलॉजी से मित्रता करने एवं उसके बद-इस्तेमाल के खतरों की समझ फैलाने में कम्प्यूटर महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकता है ।

**अथवा**

हर देश और काल में सत्ता के हाथों पराजय से क्रमशः टूटते चले जाने के बावजूद जनसंस्कृति को क्या सचमुच किसी पैरवीकार की जरूरत है ? क्या आप अपने मुँह, कान या नाक की पैरवी कर सकते हैं ? जनसंस्कृति के प्रति इन्सान का मोह किसी घने पेड़ की छाँह के नीचे बैठकर ठण्डी हवा का मजा लेने की सहज वृत्ति जितना ही स्वाभाविक और नैसर्गिक है । दुनिया के विभिन्न हिस्सों में इसके अलग-अलग रूप और रंग हमें मिल जाएँगे, लेकिन अपने हर विस्तार में यह संस्कृति हजारों-लाखों वर्षों से चली आ रही मानव-वृत्ति का ही एक अभिन्न हिस्सा है । हमारी मिट्टी, हमारे पेड़, हमारे पशु-पक्षी और हमारा समूचा परिवेश इस संस्कृति में समाया हुआ है । शायद इसीलिए इसे मिटा पाना इतना आसान भी नहीं है ।

4 (ख) सरल हिन्दी में व्याख्या कीजिए : (05)

रहिमन विपदाहू भली, जो थोरे दिन होय ।
हित–अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय ।।
रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुं मांगन जाहिं ।
उनते पहले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं ।।

**अथवा**

जो नहीं हो सके पूर्ण–काम
मैं उनको करता हूँ प्रणाम ।
कुछ कुंठित औ' कुछ लक्ष्य–भ्रष्ट
जिनके अभिमंत्रित तीर हुए;
रण की समाप्ति के पहले ही
जो वीर रिक्त तूणीर हुए !
– उनको प्रणाम !

5. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए :** (05)

| | | | |
|---|---|---|---|
| (i) | अवनि | (vi) | परुष |
| (ii) | एकत्र | (vii) | परिश्रम |
| (iii) | उद्धत | (viii) | महात्मा |
| (iv) | कोप | (ix) | सम्मुख |
| (v) | चिरंतन | (x) | बाढ़ |

6. **निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखिए :** (05)

| | | | |
|---|---|---|---|
| (i) | सप्ताहिक | (vi) | तिलांजली |
| (ii) | अहार | (vii) | गृहणी |
| (iii) | चहरदीवारी | (viii) | पहिला |
| (iv) | क्षत्रीय | (ix) | वापिस |
| (v) | निरोग | (x) | अद्वितिय |

7. **निम्नलिखित युग्मों में दिये गये शब्दों को अपने बनाये वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि दोनों के पारस्परिक अन्तर यथासंभव स्पष्ट हो जाए :** (05)

(i) शती–सती
(ii) शर–सर
(iii) शाख–साख
(iv) चार–चारु
(v) शाला–साला

**8. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए :** (05)

(i) अकल पर पत्थर पड़ना

(ii) उड़ती चिड़िया पहचानना

(iii) कलम तोड़ना

(iv) खाक छानना

(v) कल पड़ना

**9. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िये और नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

मनुष्य की जीवनी-शक्ति बड़ी निर्मम है, वह सभ्यता और संस्कृति के वृथा मोहों को रौंदती चली आ रही है । न जाने कितने धर्माचारों, विश्वासों, उत्सवों और व्रतों को धोती-बहाती यह जीवन-धारा आगे बढ़ी है । संघर्षो से मनुष्य ने नई शक्ति पाई है । हमारे सामने समाज का आज जो रूप है, वह न जाने कितने ग्रहण और त्याग का रूप है । देश और जाति की विशुद्ध संस्कृति केवल बाद की बात है । सब कुछ में मिलावट है, सब कुछ अविशुद्ध । शुद्ध है केवल मनुष्य की दुर्दम जिजीविषा । वह गंगा की अबाधित-अनाहत धारा के समान सब-कुछ को हजम करने के बाद भी पवित्र है । सभ्यता और संस्कृति का मोह क्षणभर बाधा उपस्थित करता है, धर्माचार का संस्कार थोड़ी देर तक इस धारा से टक्कर लेता है, परन्तु इस दुर्दम धारा में सब-कुछ बह जाता है । जितना कुछ इस जीवनी-शक्ति को समर्थ बनाता है; उतना उसका अंग बन जाता है, बाकी फेंक दिया जाता है । आज हमारे भीतर जो मोह है, संस्कृति और कला के नाम पर जो आसक्ति है, धर्माचार और सत्यनिष्ठा के नाम पर जो जड़िमा है, उसमें का कितना भाग काल के गाल से बचेगा, कौन जानता है ? सम्राटों-सामन्तों ने जिस आचार-निष्ठा को इतना मोहक और मादक रूप दिया, धर्माचार्यो ने जिस ज्ञान-वैराग्य को इतना महार्घ समझा, वे सब लुप्त हो गये । क्या हमारे युग की चकाचौंध ज्यों कि त्यौं बनी रहेगी ? सब बदलेगा, सब विकृत होगा-सब नवीन होगा । केवल बचेगी, शुद्ध रहेगी तो मनुष्य की जीने की प्रबल इच्छा ।

(क) प्रस्तुत गद्यांश को उचित शीर्षक दीजिए । (2)

(ख) 'मनुष्य की जीवनी शक्ति बड़ी निर्मम है', पर क्यों ? विचार कीजिए । (4)

(ग) 'देश और जाति की विशुद्ध संस्कृति केवल बाद की बात है ।' प्रस्तुत पंक्ति की व्याख्या कीजिए । (4)

**10. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर हिन्दी में निबंध लिखिए :** (30)

(i) राजभाषा हिन्दी की चुनौतियाँ

(ii) प्राकृतिक आपदा और जन भागीदारी

(iii) विदेशों में भारतीय प्रतिभा का पलायन और निदान

(iv) राष्ट्र के विकास में स्त्रियों की भूमिका